यह बाते रोज बाप बच्चो को समझाते है कि सोने से पहले अपना पोतामेल अन्दर मे देरव लो कि कि
दुःरव तो नही दिया है। और कितना समय बाप को याद किया है। मूल बात यह है। गीत भी यही कहत
कि अपने अन्दर मे देरव लो कि हम कितने तमोप्रधान से सतोप्रधान बने है। सारे दिन मे कितनी वेरी याद
किया अपने मीठे बाप को। कोई भी देहधारीको याद नही करना है। आत्माओं को कहा जाता है कि
बाप को याद करो। अब वापस जाना है। कहां जाना है? शान्ति धामसे होकर नई दुनियां मे जाना है।
यह तो पुरानी दुनियां है ना। जब बाप आवे तब स्वर्ग के दवार खुले। अब तुम बच्चे जानते हो कि
हम संगम युग पर बैठे है। यह भी वण्डर है जो संगम युग पर स्टीम्बर मे बैठ कर फिर उतर जाते है। अब
संगम युग पर आकर पुरुषार्थ बनने लिए आकर नैय्या पर बैठे हो, पार जाने के लिये। फिर पुरानी
कलियुगी दुनियां से दिल हटा लेनी होती है। इस शरीर द्वारा सिर्फ पार्ट बजाना है। अब हमको वापस जाना
है, बडी खुशी से। मनुष्य मुक्ति के लिये कितना माथा मारते है परन्तु मुक्ति जीवनमुक्ति का अर्थ समझते ही
नही है। शास्त्रो के अक्षर सिर्फ सुने हुये है परन्तु वो क्या चीज है कौन देते है कबदेते है यह कुछ भी
पता नही है। तुम बच्चे जानते हो कि बाप आते ही है मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा देने। सो भी कोई
एक वार थोडेई, अनन्त वार तुम मुक्ति जीवनमुक्ति फिर जीवनबंध मे आते हो। दुनियां इन बातो को नही
जानतीहै। इसलिये ही कहा जाता है बन्दर से भी बदतर। मनुष्य होकर जिनको याद करते है परमपिता
परमात्मा, तो उनको जानना भी चाहिये ना। अब यह बुद्धि पडी है कि हम आत्मा है। बाबा हम
बच्चो को शिक्षा बहुत सहज देते है। तुम भक्ति मार्ग मे दुःरव मे याद करते थे। परन्तु पहचानते नही थे।
अब मैंने तुम्हें अपनी पहचान दी है कि कैसे मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। अभी तक
कितने विकर्म विनाश हुये है वो अपना पोतामेल रखने से पता पडेगा। जो सर्विस मे ही लगे रहते है
उनको मालूम पडता है। बच्चो को सर्विस का शौक है। आपस मे मिल कर प्रभी निकलते है। मनुष्यों
का जीवन हीरे जैसा बनाने। यह कितने पुण्य का कार्य है। इसमे रवर्च आदि की भी कोई बात नही है।
सिर्फ हीरे जैसा बनने लिये बाप को याद करना है। पुरवराज परी, सब्ज परी। यह सब जो नाम है वो
तुम हो। जितना-2 याद मे रहेंगे उतना हीरे जैसा बनते जावेंगे। कोई माणिक जैसा बनेंगे कोई पुरवराज
जैसा बनेंगे। नवरत्न होते है ना। कोई ग्रहचारी होती है तो नवरत्न पहनते है। ग्रहचारी मे बहुत
टोटके देते है। यही तो सब धर्म वालों के लिये एक ही टोटका है मनमनाभव। क्योंकिगाड ईज वन।
मनुष्य से देवता बनने की वा मुक्ति जीवनमुक्ति को पाने की तदबीर भी एक ही है। सिर्फ बाप को याद
करना है। तकलीफ की कोई बात नही। सोचना चाहिये कि मेरी याद क्यों नही ठहरती है? सारे दिन
मे मैने इतना कम क्यो याद किया। जबकि इसी याद से हम एवर ह्यौअर निरोगी बनेंगे। तो क्यो नही अप
चार्ट रख कर उन्नती को पावे? बहुत है जो दो चार रोज चार्ट रख कर फिर भूल जाते है। कोई कोयी
यह समझाना बहुत सहज होता है कि नई दुनियां को सतयुग पुरानी दुनियां को कलियुग कहा जाता
है। कलियुग बदली होकर फिर जरूर सतयुग ही होगा। बदली होता है तभी हम समझा रहे है। शास्त्रो
मे तो कल्प की आयु ही लम्बी कर दी है। इसलिये सभी घोरे अन्धेरे मे है। दूसरी बात की कई बच्चे बाप
के लिये भी कह देते है कि अभी पूरा निश्चय नही होता है कि यह वो ही है जो ब्रह्मा तन मे आकर
पढा रहेहै। अरे - तुम ब्राह्मण हो ना? ब्र, कु, कु कहलाते हो? इसका अर्थ ही फिर क्या है? ऐसी कहां
मिलेगा। एडाप्टेशन तब होती है जब कि कोई प्राप्ती होती है। तुम ब्राह्मा के बच्चे ब्रह्मा कुमार कुमा
बने हो। सचमुच बने हो वा इसमे भी कोई शंशय है? शिव बाबा से वर्सा लेनेलिये उनका बने हो ना।
परन्तु इसमे भी कोई को शंशय हो जाता है। पक्के निश्चय बुद्धी नही है। स्त्री और पुरुष की दृष्टी बद
मे भी समय लगता है। कोई बहुत महानभाग्यशाली होते है तो झट समझ जाते है। हम भी स्टूडण्ट
यह भी स्टूडण्ट। तो भाई-बहन हो गये ना। बाकी मेहनत लगती है। एक बहादुरी तक तद

जव अपने आप को स्टुडेण्ट समझे। आत्माये तो सब भाई-2 है। फिर ब्र,कु,कु बनने पर भाई-बहन हो जा है। यह बड़ा वण्डर है। और खुशी भी होती है मनुष्य से देवता बनने की। यह कोई भी जानते नही है कि मनुष्य से देवता कैसे बनना होता है। तुम्हारे मे से भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते है। कोई तो बन्धन मुक्त भी है तो भी कुछ ना कुछ बुधी जाती है। कर्मातीत अवस्था होने मे टाईम लगता तुम बच्चो को अन्दर मे बहुत खुशी रहनी चाहिये। कोई भी मूड ऑफ नही। हम आत्माओं को अब बाबा के पास जाना है पुराने शरीर आद सब छोड कर। हमने कितना पार्ट बजाया है। अब चक्र पुरा होता है। ऐसे-2 अपने साथ बाते करनी होती है। जितना बाते करेंगे उतना हर्षित भी रहेंगे। और अपनी चलन को भी देखते रहेंगे। कहा तक हम लक्ष्मी को वरने लायक बने है। नारद तो भक्त था ना। जब तक भक्ति की बदबु ना निकले तब तक कर्मातीत अवस्था हो नही सकती है। बुधी मे स्वदर्शन चक्र फिरता रहे। बुधी से ही समझा जाता है अभी तो थोडे ही समय मे यह पुराना शरीर छोडना है। यह बहुत जन्मो के अन्त के जन्म की भी अन्त है। इस मृत्यु लोक मे यह अन्तिम शरीर है। तुम प्रैक्टिस भी हो ना? अपने को एक्टर समझते हो। आगे नही समझते थे। अभी यह नालेज मिली है। तो अन्दर मे खुशी बहुत रहनी चाहिये। पुरानी दुनिया से वैराग नफरत आनी चाहिये। तुम बेहद के सन्यासी (राज)योगी हो। इस पुराने शरीर का भी बुधी से सन्यास करना है। घर बार छोड भागना नही है। आत्मा समझती है इसीस बुधी नही लगानी है। बुधी से इस पुरानी दुनिया पुराने शरीर का सन्यास किया है। अभी हम आत्माये जाती है जाकर बाप से मिलेगी। सो भी तब होगा जब एक बाप को ही याद करेंगे। और कोई को याद किया तो स्मृति जरूर आवेगी। फिर सजा भी खानी होगी और पद भी भ्रष्ट ~~हो जावेगा। जैसे-2 विद्यार्थी जो होते है वो अपने साथ प्रण~~ करते है हम स्कालरशिप लेकर ही छोडेंगे। एक-2 स्कूल से दो चार ऐसे निकलेंगे। तो यहां पर भी हर एक को यही ख्याल मे रखना है कि हम बाप से पुरा राजभाग लेकर ही छोडेंगे। उनकी फिर चलनी भी वैसी ही रहेगी। आगे चल कर पुरुषार्थ करते-2 गैलप करना है। वो तब होगा जब रोज शाम को अपनी-2 अवस्था को देखेंगे। बाबा के पास समाचार तो आते ही है हर एक के। बाबा हर एक को समझ सकते है। किसीको तो कह भी देते है कि तुम्हारे मे तो इतना दम नही दिखाई पडता है। यह लक्ष्मी बनने जैसी शक्ल दिखलाई नही पडती है। चलन, खान-पान आद तो देखो। सर्विस ही कहां करते हो? फिर क्या बनोगे? फिर दिल मे समझते है कि हम कुछ करके दिखावे। इसमे हर एक को इनडिपेण्डेण्ट अपनी तकदीर ऊंच बनाने लिये पढना है। अगर श्रीमत पर नही चले तो फिर इतना ऊंच पद नही पा सकेंगे। अभी पास नही हुये तो कल्प-कल्पान्तर नही होंगे तुमको सब सा० होगी कि हम किस पद को पाने के लायक है। अपने पद का भी सा० करते रहेंगे। शुरू मे भी सा० करते थे। फिर बाबा सुनाने लिये मना कर देते थे। पिछाडी मे सब पता पडेगा कि हम क्या बनेंगे? फिर कुछ कर नही सकेंगे। कल्प-कल्पान्तर की यही हालत हो जावेगी। डबल सिरताज डबल राज भाग्य पा नही सकेंगे। अभी पुरुषार्थ करने की मार्जिन बहुत है। त्रेता के अन्त तक 16108 की बडी माला बननी है। यहां पर तुम आये हो तो नर से नारायण बनने का पुरुषार्थ करना चाहिये। जब कर्म दर्जे का सा० होगा तो उस समय जैसे कि नफरत आने लगेगी। मुंह नीचे हो जावेगा हमने तो कुछ भी पुरुषार्थ नही किया है। बाप ने कितना समझाया कि चार्ट रखो यह करो वो करो इसलिये ही बाबा कहते थे, जो भी बच्चे आते है सबकी फोटो रखो। भल ग्रुप का ही इकठा हो। पार्टी ले आते हो ना। फिर उसमे तारीख, नाम आद सब लगा पडा हो। फिर बाबा बताते रहेंगे कि कौन गिरे? बाबा पास समाचार तो प्रायः सब आते रहते है। बताते रहे कितनो को माया खा गई विवाद हो गया। खत्म हो गये बच्चियां भी बहुत गिरती है। जैसे काम की भूत नाथिनी बन जाती है। एक दम हडी टूटती। ब्राह्मणी पक्का बन कर आती और फिर एकदम दुर्गति को पा लेती है। बात मत पूछो। इसलिये ही बाप कहते

है मीठे-2 बच्चों खबरदार रहो। माया कोई ना कोई रूप धर कर पकड़ लेती है। कोई के नाम रूप तरफ देखो भी नहीं। भल इन आँखों से देखते हैं परन्तु बुद्धि में एक बाप को याद रहे। तीसरा नेत्र मिला ही इसी लिये है कि बाप को देखो और याद करो। देहअभिमान को छोड़ते जाओ। ऐसे भी नहीं कि आँख नीचे कर कोई से बात करनी है। ऐसे कमजोर नहीं बनना है। देखते हुये बुद्धि का योग अपने बिलवेड माशूक की तरफ हो। इस दुनिया को देखते हुये अन्दर में समझते हैं कि यह तो कब्रिस्तान बननी है। इससे क्या सम्बन्ध रखेंगे। तुमको ज्ञान मिलता है उसको धारण कर और उस पर चलना है। बाकी भक्ति मार्ग में तो सब हैं दन्त कथायें। भक्ति मार्ग को कब ज्ञान मार्ग नहीं कहा जाता। कहीं भी कोई शास्त्र की बात बोले तो कहो शास्त्रों का नाम नहीं लो। वो सब है भक्ति मार्ग। अभी है ज्ञान मार्ग। ज्ञान है तो फिर कोई भक्ति की तो बास भी नहीं रहनी चाहिये। सतयुग में भक्ति की बास नहीं रहती है। भक्तिमार्ग का कोई भी शास्त्र आदि वहाँ पर नहीं होता है। संगम युग पर तो यह सब कुछ भूलना पड़ता है। बाबा ने बहुत बार समझाया है कि यह शास्त्र आदि सब भक्ति मार्ग के हैं। ज्ञान मार्ग बिल्कुल अलग है। ज्ञान एक परमपिता परमात्मा पास ही है। बाकी सब है भक्ति। तब ही तो पतित पावन ज्ञान सागर को बुलाते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि ज्ञान से सद्गति होती है। भक्ति से ड्रामा अनुसार दुर्गति ही होनी है। अब फिर बाप आये हैं सद्गति करने तो फिर बाप को ही याद करना चाहिये। सारा दिन बाबा बाबा करते रहना चाहिये। प्रदर्शनी पर समझाते समय हजार बार मुख से बाबा -2 निकलते रहना चाहिये।

*** * * ** *** * ********* ******** **********

बाबा को याद करने पर तुम्हारा कितना फायदा होगा। शिव बाबा कहते हैं कि मामेकम याद करो तो

******

विकर्म विनाश होंगे। शिव बाबा को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। बाबा कहते

*** ****

हैं अब बस मुझे ही याद करो। यह [illegible] [illegible] बाप ने कहा है बिल्कुल अच्छी रीती पीटो उन लोगों को। दूसरी कोई [illegible] बात हो यहाँ है।

* **** * * * ************************

पहले-2 बाप को तो जानो। इसमें ही कल्याण है। यह 84का चक्र तो समझाना बहुत आसान है। बच्चों को प्रदर्शनी में समझाने का शौक बहुत-2 होना चाहिये। अगर कहीं देखें कि हम नहीं समझा सकते हैं तो कह सकते हैं कि हम अपनी बड़ी बहन को बुलाते हैं। क्योंकि यह भी पाठशाला है ना। इसमें कोई कम कोई जास्ती पढ़ते हैं। इस कहने पर देहअहंकार नहीं आना चाहिये। जहाँ-2 बड़ा सेन्टर हो तो

****

प्रदर्शनी कर देनी चाहिये। चित्र भी लगा हुआ हो गेट वे टू हेवन। वो स्वर्ग। अब स्वर्ग के द्वार

** ***** * ***** ***

खुल रहे हैं। इस होवनहार लड़ाई से पहले ही अपना वर्सा ले लो। जैसे मन्दिर में रोजाना जाना होता है वैसे ही तुम्हारी भी यह पाठशाला है। चित्र लगा हुआ होगा तो समझाने में सहज होगा। कोशिश करो कि हम अपनी पाठशाला को चित्रशाला कैसे बनावें? मकान भी होगा तो मनुष्य आवेंगे।

* ** * * * * *******************************

वैकुण्ठ जाने का रास्ता। एक सैकेंड में समझने का रास्ता। बाप कहते हैं कि तमोप्रधान तो कोई वैकुण्ठ में जा नहीं सकेंगे। नई दुनिया में जाने लिये सतोप्रधान बनना है। यह दुनिया ही तमोप्रधान है। भल बड़े-2 शंकराचार्य आदि हैं सबको बोलो यह भ्रष्टाचारी दुनिया है। विष से पैदा होने वाले हैं। और फिर ऊपर से बाप की ग्लानी कर और भी बोझा चढ़ाते हैं। सर्वव्यापी=सर्वव्यापी के ज्ञान से वि पापात्मा बनते हैं। और सभी को बनाया है। पहले-2 बाप का परिचय अच्छी रीती देना है। फिर माने न माने। आगे चल कर मानेंगे अभी नहीं मानते हैं। फिर बाद में रियेलाइज करेंगे। सर्विस तो बहुत है ना। बनारस में बहुत आते हैं। फारेनर्स भी आते हैं। उनको भी समझाना है। बोलो गाडफादर ही लिबरेटर है। कैसे लिबरेट करते हैं तो चलो हम आपको समझाते हैं। अब यह है ओल्ड वर्ल्ड। आयरन एज्ड तमोप्रधान है। इम्प्योर भी है। असली में आत्मायें [illegible] शान्ति धाम स्वीट होम में रहने वाली। वहाँ पर प्योर थी अब इम्प्योर है। फिर भी इसको [illegible] बनना है। बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन कर पावन बन जावेंगे। ओमम